



https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

ससिटमकि लुपस एरीदीमॅटोसस

के संस्करण 2016

२. नदिान व् उपचार

२.१. इस बीमारी का नदिान कैसे कयिा जाता है?

इस बीमारी का नदिान रोगी के बताये लक्षण व् रोगी में पाये जाने वाले संकेत देख कर कयिा जाता है। इसके साथ खून व् पेशाब की जांच के साथ अन्य बीमारियां ना होने की स्तथि में ही इस बीमारी का नदिान कयिा जाता है। इस बीमारी के नदिान में कठनाई होती है क्योंकि रोगी में सभी संकेत व् लक्षण एक साथ नहीं प्राप्त होते। इस बीमारी को अन्य बमारियों से भन्नि कर पाने के लिए अमेरिकन रहुमतस्म एसोसिएशन ने ११ लक्षणों की सूची बनाई है जो इस बीमारी के नदिान में मदद करते हैं।

यह सूची उन लक्षणों को ध्यान में रख कर बनाई गयी है जो इस बीमारी में आमतौर पर पाये जाते हैं। ११ में से कम से कम ४ लक्षण होने पर ही इस बीमारी का ठोस नदिान कयिा जाता है, हालाँकि वरिष्ठ चकित्सक ४ से कम लक्षण होने पर भी इस बीमारी का नदिान कर पाते हैं। यह लक्षण नमिन् है:

चेहरे पर ततिली के आकर की लाली

यह लाली आँखों के नीचे गालों पर व् नाक के ऊपर होती है

धूप से त्वचा का प्रभावति होना

धूप से सेंसिटिविटी होने से धूप का प्रकोप अधिक होता है और कपड़ों से ढकी हुई त्वचा पर असर नहीं होता

डस्काँड लूपस

यह पैसे के आकर का उभरा हुआ दाग होता है जिसके ऊपर से त्वचा की परत छूट जाती है, ठीक होने के पश्चात यह दाग छोड़ देता है। दूसरे समुदायों की तुलना में अफ्रीकी बच्चों में यह अधिक पाया जाता है।

नाक व् मुंह में छाले

यह छाले नाक व् मुंह के अंदर होते हैं। इनमें दर्द नहीं होता। नाक के छालों में से खून भी बह

सकता है।

गठिया

इस बीमारी में गठिया से अधिकतर बच्चे पीड़ित होते हैं। इसमें ऊँगली, कलाई, कोहनी, घुटने, कंधे आदि जोड़ों में दर्द व सूजन आ जाती है। यह सूजन एक जोड़ से दूसरे में आ सकती है या दोनों तरफ के एकसे जोड़ों में भी आ सकती है। जोड़ों में अधिकतर टेढ़ापन नहीं आता।

प्लूराइटिस

फेफड़े की ऊपरी झलिली यानी प्लूरा के प्रज्वलन को प्लूरसी कहते हैं और हृदय की झलिली यानी पेरिकार्डियम के प्रज्वलन को पेरिकार्डिटिस कहते हैं। इन नाज़ुक झलिलियों के प्रज्वलन के कारण हृदय व फेफड़ों के इर्द गिर्द पानी इकठ्ठा हो जाता है। फेफड़ों के इर्द गिर्द पानी आने से श्वास लेने में तकलीफ होती है।

गुर्दों पर प्रभाव

अधिकतर बच्चों के गुर्दे इस बीमारी से प्रभावित होते हैं, किसी में कम व किसी में बहुत अधिक प्रभाव देखा जाता है। शुरुआत में गुर्दे प्रभावित होने का कोई लक्षण नहीं दिखता व पेशाब एवं गुर्दों के कार्य की खून जांच से ही इस खराबी का पता किया जाता है। अधिक खराबी होने पर पेशाब में अधिक प्रोटीन बहार निकलता है व पैरों और आखों के इर्द गिर्द सूजन दिखाई देती है।

केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र

दमाग पर प्रभाव से सर दर्द, दौरे, व मनोविकार जैसे ध्यान न लगा पाना, याद न रख पाना, उदासी या अवसाद, मनोविकृति (एक गंभीर मानसिक रोग जिसमें सोच व व्यवहार परिवर्तित हो जाते हैं) हो सकते हैं।

रक्त कण के विकार

रक्त कण एंटीबाडीज के प्रभाव से नष्ट होने लगते हैं। लाल रक्त कण (जो शरीर के विभिन्न अंगों तक ऑक्सीजन पहुंचाते हैं) के टूटने को हेमोल्यूसिस कहते हैं और इससे हेमोल्युटिक एनीमिया हो सकता है। रक्त कण नष्ट होने की प्रक्रिया धीमी व काम हानिकारक हो सकती है या अधिक रक्त कण एकदम नष्ट होने से आपात्कालीन स्थिति आ सकती है।

रक्त के सफ़ेद कण भी एसएलई में कम हो जाते हैं पर यह गंभीर नहीं होता। सफ़ेद कण की कमी को लुकोपीनिया कहते हैं।

रक्त के जमाव में सहायता करने वाले कण जो की प्लेटलेट कहलाते हैं, उनकी कमी को थ्रोम्बोसीटोपेनिया कहते हैं। प्लेटलेट कण की कमी से बच्चों के आंत, दमाग, गुर्दे व चमड़ी से रक्त रसि सकता है।

प्रतिरक्षा शक्ति की खराबी

प्रतिरक्षा शक्ति की खराबी उन एंटीबाडीज की खराबी होती है जो इस बीमारी की ओर इशारा करती है।

एंटीफॉस्फोलपिडि एंटीबाडी का होना(अपेंडिक्स-१)

एंटी नेटवि डीएनए एंटीबाडी(यह एंटीबाडी शरीर के अनुवांशिक तत्व के खिलाफ होती है)यह एंटीबाडी खास लुपस में ही पायी जाती है व इसकी मात्र का माप करने से चिकित्सक को लुपस की दशा मापने में मदद मिलती है।

एंटी एसएम एंटीबाडी: यह एंटीबाडी सबसे पहले मसि स्मिथ नामक महिला में देखी गयी थी।यह एंटीबाडी एस एल ई की बीमारी में पायी जाती है।

एंटी न्यूक्लीयर एंटीबाडी (ऐएनए)

यह एंटीबाडी रक्त कण के न्यूक्लियस के वरिद्ध होती है व लुपस के लगभग शतप्रतशित मरीजों के रक्त में पायी जाती है।परन्तु सरिफ ऐएनए का पाया जाना ही इस बीमारी का सबूत नहीं होता,यह सरिफ एक लक्षण है।ऐएनए ५-१५% स्वस्थ बच्चों में भी पाया जाता है।

इन जाँचों का क्या महत्व है?

इन जाँचों के द्वारा हम लुपस की बीमारी की पुष्टि कर सकते हैं व यह भी देख सकते हैं की इस बीमारी की वजह से शरीर के कौन कौन से अंग प्रभावित हुए हैं। इस बीमारी में समय समय पर रक्त व पेशाब की जांच करना जरूरी है जिससे इस बीमारी की तीव्रता व दवा के दुष्परिणाम अथवा दवा के असर के बारे में जानकारी मिल सके।

सामान्य जाँचे वभिन्नि अंगों के असर को दर्शाती हैं। ईएसआर(एरीथ्रोसाइट सेडीमेंटेशन रेट) व सीआरपी (सी रिएक्टिव प्रोटीन),दोनों ही प्रज्ज्वलन में बढ़ी हुई मात्र में पाये जाते हैं।लुपस की बीमारी में सी आर पी ठीक भी हो सकता है व सी आर पी अधिक होने से कीटाणु का संक्रमण होने की संभावना होती है। रक्त कण की जांच से एनीमिया, सफ़ेद कण की कमी व प्लेटलेट की कमी के वषिय में जानकारी मिलती है। सीरम प्रोटीन एलेक्ट्रोफोरेसिस से गामा ग्लोब्युलिन की मात्र का अनुमान लगता है (जो इस बीमारी में प्रज्ज्वलन व एंटीबाडी अधिक होने से बढ़ जाते हैं)। एल्ब्यूमिन: गुरदे पर प्रभाव होने से यह कम हो जाता है रक्त की सामान्य जांच जैसे यूरिया,नाइट्रोजन,इलेक्ट्रोलाइट इत्यादि से गुरदे पर प्रभाव,जगिर व मांसपेशियों पर प्रभाव देखा जा सकता है। लविर फंक्शन टेस्ट व मसल एंजाइम: इनके द्वारा जगिर व मांसपेशियों पर प्रभाव देखा जा सकता है। गुरदे पर प्रभाव देखने के लिए बीमारी की शुरुआत व समय समय पर पेशाब की जांच करना अनविर्य है।पेशाब की जांच में यदिलाल रक्त कण व एल्ब्यूमिन पाया जाता है तो वह गुरदे के प्रज्ज्वलन की ओर संकेत करता है।कभी कभी २४ घंटे का पेशाब इक्कट्टा कर उसमें एल्ब्यूमिन की जांच करनी पड़ती है जो गुरदे की बीमारी को जल्दी पकड़ पाने में मदद करती है। कॉम्प्लीमेंट लेवल: कॉम्प्लीमेंट प्रोटीन हमारे शरीर की जन्मजात प्रतिरोधक शक्ति का हिस्सा होते हैं।कुछ कॉम्प्लीमेंट(सी३ व सी ४)प्रज्ज्वलन में काम हो जाते हैं व लुपस की बीमारी की तीव्रता दर्शाते हैं,खास कर गुरदे की बीमारी का अनुमान कॉम्प्लीमेंट कम होने से लगाया जाता है। शरीर के वभिन्नि अंगों पर लुपस के प्रभाव को देखने के लिए अब कई जाँचे उपलब्ध हैं,जैसे बायोपसी(किसी अंग के टुकड़े की जांच), गुरदे की बायोपसीअधिकतर तब की जाती है जब गुरदे पर प्रभाव देखा जाता है।इस जांच से गुरदे पर लुपस के प्रभाव के बारे में जानकारी मिलती है व सही दवाएं देने में मदद

मलित्ती है। त्वचा की बायोपसी से लुपस के कारन त्वचा पर होने वाले प्रभाव व त्वचा की रक्त कोशिकाओं में होने वाले प्रज्ज्वलन के वषिय में जानकारी मलित्ती है। छाती का क्ष करिण (दलि व फेफड़े के लिए), इकोकार्डिओग्राफी, इलेक्ट्रोकार्डिओग्राफी, इलेक्ट्रोएन्सेफेलोग्राफी, पल्मोनरी फंक्शन टेस्ट, एमआरआई, दमिाग के स्कैन, अन्य अंगों की बायोपसी इत्यादि अन्य जाँचे हैं जो इस बीमारी में की जा सकती हैं।

२.३ क्या इसका इलाज संभव है?

अभी इस बीमारी को जड़ से समाप्त करने का कोई इलाज संभव नहीं है। इस बीमारी का इलाज कर इससे होने वाली जटलिताओं का नदिान कया जा सकता है व वभिन्नि अंगों को प्रभावति होने से बचाया जा सकता है। शुरुआत में बीमारी का भार अधिक होने के कारण ज़्यादा और अधिक मात्र में दवाएं इस्तेमाल करनी पड़ती हैं पर कुछ समय में कुछ दवाओं के साथ बच्चों की तबयित बलिकूल ठीक रह सकती है।

२.४ इस बीमारी के लिए क्या इलाज उपलब्ध है?

इस बीमारी के लिए बच्चों में उपयोग के लिए कोई भी दवा अधिकृत नहीं है और अधिकांश दवाएं शरीर में लुपस के कारण होने वाले प्रज्ज्वलन को काम करने में ही मदद करती हैं। इस बीमारी के इलाज के लिए ५ तरह की दवाएं इस्तेमाल की जाती हैं, जो नमिन् हैं:

नॉन स्टेरॉइडल एंटी इंफ्लेमेटरी ड्रग्स (एन एस ऐ आई डी)

एन एस ऐ आई डी जैसे आइबूप्रोफेन अथवा नेप्रोसीन गठिया के कारण होने वाले दर्द को काम करने में मदद करती हैं। इन दवाईओं को शुरुआत में अधिक मात्र में दे कर इनकी मात्र गठिया काम होने के साथ काम कर दी जाती है। यह दवाएं कई प्रकार की होती हैं, एस्पिरिन भी इसी गुट की एक दवा है जो जोड़ों के दर्द में इस्तेमाल की जाती है। बच्चों में एस्पिरिन काम मात्र में तब दी जाती है जब रक्त के जमने व रक्त का थक्का बनने की सम्भावना होती है।

एंटी मलेरिअल ड्रग्स

एंटी मलेरिअल ड्रग्स जैसे हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन इस बीमारी में होने वाली त्वचा की तकलीफ का इलाज व उसकी रोकथाम करने में बहुत मदद करती हैं। इन दवाइयों का असर होने में कभी कभी कुछ महीने भी लग जाते हैं। शुरुआत में ही यह दवाएं देने से लुपस की तीव्रता व उसके कारण से होने वाली गुरदे, हृदय व अन्य अंगों की खराबी को रोक जा सकता है। मलेरिया व लुपस का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है पर हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन शरीर की प्रतिरोधक शक्ति को काबू में रखने में मदद करती है।

कॉर्टिकोस्टेरॉइड्स

कॉर्टिकोस्टेरॉइड्स, जैसे प्रेडनिसोन व प्रेडनिसिलोन, प्रज्ज्वलन को काम कर के प्रतिरोधक शक्ति की खराबी को कम करते हैं। यह लुपस की बीमारी की रोकथाम के लिए प्रमुख

दवाएं हैं। कुछ बच्चों की हलकी बीमारी के लिए प्रेडनिसोलोन व हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन ही पर्याप्त होते हैं। जब बीमारी अधिक तीव्र होती है या अंदरूनी अंगों की खराबी के साथ होती है तब इन दवाइयों को इम्यूनोसुप्रेसिव ड्रग्स के साथ मिला कर दिया जाता है। बिना कॉर्टिकोस्टेरॉयड्स की मदद के शुरुआत में लुपस की बीमारी पर काबू नहीं पाया जा सकता। कुछ बच्चों को यह दवाएं महीनों या कुछ साल के लिए भी लेनी पड़ सकती हैं। बीमारी की तीव्रता व अंगों पर प्रभाव के अनुसार कॉर्टिकोस्टेरॉयड्स की मात्रा निर्धारित की जाती है। अधिक मात्रा में या नस के द्वारा यह दवा तब दी जाती है जब गुर्दे, दिमाग व लाल रक्त कण पर लुपस का प्रभाव होता है। इसको लेने से बच्चे एकदम से अच्छा महसूस करने लगते हैं पर लम्बे समय तक अधिक मात्रा में यह दवाएं हानिकारक होती हैं, इसीलिए बीमारी काबू में आते ही इनकी मात्रा जल्दी से जल्दी कम की जाती है। इन दवाओं को धीरे धीरे कम किया जाता है व रक्त की जांच व बच्चे की जांच कर के इनकी मात्रा कम की जाती है जिससे बीमारी दबी रहे व वापस न आ पाये।

कभी कभी कुछ कशिरावस्था के बच्चे इन दवाइयों के दुष्परिणाम के कारण या अच्छा महसूस न करने के कारण इन दवाइयों की मात्रा अपने आप कम या अधिक कर लेते हैं। कोर्टिसोन हमारे शरीर में भी बनता है, पर जब हम यह अधिक मात्रा में लेते हैं तब हमारे शरीर में इसकी उत्पादन बंद हो जाता है, इसीलिए बच्चों व उनके अभिभावकों के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि यह दवाएं अपने आप बिना चिकित्सक की अनुमति के कम, ज्यादा या बंद करना खतरनाक व जानलेवा हो सकता है।

यदि कॉर्टिकोस्टेरॉयड्स लम्बे समय तक उपयोग किये जाते हैं तब हमारे शरीर के एड्रेनल ग्रंथि इनका उत्पादन बंद कर देती हैं। कोर्टिसोन हमारे रक्तचाप को बनाये रखने में मदद करता है व एकदम इसे कम कर देना जानलेवा भी हो सकता है। इसके अलावा एकदम से इसे बंद करने से बीमारी वापस भी आने का खतरा होता है।

नॉन बायोलॉजिकल ड्रग्स डीजीजे मोडफियिंग ड्रग्स

यह दवाएं, जैसे की एज़ाथायोप्रीन, मेथोट्रेक्सेट, साइक्लोफोस्फेमाईड व माइकोफनोलेट, कॉर्टिकोस्टेरॉयड्स से भिन्न रूप से काम करती हैं। इनका उपयोग चिकित्सक तब करते हैं जब लुपस की बीमारी सिर्फ कॉर्टिकोस्टेरॉयड्स के उपयोग से काबू में नहीं आ पाती। कॉर्टिकोस्टेरॉयड्स के दुष्प्रभाव को कम करने व बीमारी की तीव्रता को शांत करने के लिए इनका उपयोग किया जाता है।

एज़ाथायोप्रीन व माइकोफनोलेट गोलीयों के रूप में, साइक्लोफोस्फेमाईड गोलीयों व नस के द्वारा व मेथोट्रेक्सेट गोलीयों व त्वचा के अंदर सुई के द्वारा दिए जाते हैं।

बायोलॉजिक (डी एम ऐ आर डी)

बायोलॉजिक (डी एम ऐ आर डी) दवाएं एक विशेष प्रकार की दवाएं होती हैं जो अनुसन्धान के बाद बनाई जाती हैं। यह दवाएं या तो किसी एंटीबायोटिक के बनने को रोकती हैं या किसी एंटीबायोटिक के प्रभाव को रोकती हैं। इसी गुट की एक दवा जिसका नाम रितुक्सिमैब है, इस बीमारी में तब इस्तेमाल की जाती है जब अन्य साधारण दवाएं पूरी तरह बीमारी पर काबू नहीं कर पाती। बिलीमुमाब नामक एक अन्य दवा इसी गुट में शामिल है जो शरीर के बी सेल को लक्ष्य बनती है व ऑटोएंटीबायोटिक का उत्पादन कम करती है, फलित्वा यह दवा लुपस के व्यसक

मरीजों में इस्तेमाल की जाती है। बच्चों में इन दवाओं के उपयोग पर अभी अनुसन्धान चल रहा है।

ऑटोइम्यून बमिारिओं खासकर लुपस पर सक्रिय रूप से अनुसन्धान चल रहा है जिससे ऐसे दवाएं बनाई जा सकें जो पूरी प्रतिरोधक शक्ति को कम न करके सिर्फ उन सेल्स को लक्ष्य बनायें जो इस बीमारी में खास रूप अदा करते हैं। आजकल इन दवाओं पर बहुत अनुसन्धान चल रहा है जिससे निश्चिंति ही लुपस से पीड़ित बच्चों का भविष्य बेहतर हो पायेगा।

२.५. इन दवाओं के दुष्प्रभाव क्या हैं?

ये दवाएँ लुपस की बीमारी के सभी लक्षणों को दूर करने में मदद करती हैं। अन्य दवाओं की तरह इन के भी दुष्प्रभाव होते हैं। इनकी जानकारी ड्रग थेरेपी के अंतर्गत दी गई है।

1=15*t1>नॉन स्टेरॉइडल एंटी इंफ्लेमेटरी ड्रग्स (एन एस ऐ आई डी) कुछ खाने के बाद लेने चाहिये नहीं तो वे पेट में जलन पैदा कर सकते हैं। इसी के साथ इन दवाओं की वजह से कभी कभी आसानी से नील पड़ जाना अथवा, जगिर व गुरदे पर प्रभाव भी पड़ सकता है। एंटी मलारिअल दवाएं आँख की रेटिना नामक परत में बदलाव ला सकती हैं, इसीलिए मरीजों को नियमिति रूप से आँखों की जांच आँखों के डॉक्टर द्वारा करवानी चाहिए।

कॉर्टिकोस्टेरोइड्स के कम व अधिक समय के दुष्प्रभाव हो सकते हैं। इन दवाओं को लम्बे समय तक अधिक मात्र में लेने से इनके दुष्प्रभाव होने का खतरा अधिक होता है। इन दवाओं के मुख्य दुष्प्रभाव निम्न हैं: शरीर की बनावट में फर्क आना (जैसे, गालों का फूलना, आँखों पर सूजन आना, शरीर पर अधिक बाल उगना, त्वचा पर बैंगनी धारियां पड़ना, मुँहासे होना अथवा जल्दी नील पड़ जाना) वजन को नियंत्रित करने के लिए खान पान व कसरत का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। संक्रमतिरोग जैसे क्षय रोग व चकिन पाँक्स होना का अधिक खतरा होता है। जो बच्चा यह दवाएं ले रहा होता है व चकिन पाँक्स के मरीज के संपर्क में आता है, उसे तुरंत अपने चकित्सक को मलिना चाहिए। चकिन पाँक्स से तत्काल सुरक्षा के लिए ऐसे बच्चों को पहले से बनी एंटीबाडी दी जानी चाहिए। पेट की तकलीफ जैसे बढहजमी होना या पेट में जलन होना। इस तकलीफ के लिए एंटी अलसर दवाएं दी जाती हैं। वकिस में कमी होना कम देखे जाने वाले दुष्प्रभाव: उच्च रक्तचाप मांसपेशियों में कमजोरी (बच्चों को सीढियाँ उतरने, चढ़ने में व बैठ कर खड़े होने में कठिनाई होती है) ग्लूकोस के पाचन में दिकित, खास कर जब अनुवांशिक रूप से मधुमेह होने की सम्भावना हो। मजिाज में परिवर्तन आना, उदास रहना आँखों में तकलीफ जैसे मोतिया बदि बनना अथवा आँख का प्रेशर बढना (ग्लौकोमा) हड्डियों क पतला पड़ना (ऑस्टियोपोरोसिस)। यह दुष्प्रभाव कसरत करने, कैल्शियम से भरपूर खान पान व कैल्शियम एवं वटामिनि डी लेने से नहीं होता। यह ध्यान रखना जरूरी है की यह दुष्प्रभाव स्टेरॉयड्स कम करने से कम या पूरी तरह खत्म हो जाते हैं। डी एम ऐ आर डी (बायोलाँजिकि व नॉन बायोलाँजिकि) भी दुष्प्रभाव कर सकते हैं जो कभी कभी गंभीर भी हो सकते हैं।

२.६. इलाज कब तक चलना चाहिए?

जब तक इस बीमारी के लक्षण रहते हैं तब तक इलाज बंद नहीं होना चाहिए। यह एक मानी हुई बात है की बच्चों में स्टेरॉयड्स को पूरी तरह हटा पाना बहुत कठिन होता है। यदि काम से काम मात्र में भी स्टेरॉयड्स लेते हुए बच्चों की बीमारी के लक्षण दबे रहे तब भी उनकी बीमारी लम्बे समय तक शांत रह सकती है। कई मरीजों में बीमारी बार बार उभर कर न आ पाये इसके लिए यही एक बेहतर मार्ग सिद्ध हो सकता है।

२.७. पारम्परिक इलाजों का इस बीमारी में क्या योगदान है?

कई पारम्परिक इलाज उपलब्ध होने के कारण माता पति व परिवार जन भ्रमति हो सकते हैं। यदि आप अपने बच्चे के लिए इन औषधियों का उपयोग करना चाहते हैं तो पहले आने बालरोग चिकित्सक से सलाह अवश्य कर लें क्योंकि कभी कभी इन औषधियों के दुष्प्रभाव हो सकते हैं व दो प्रकार की पैथी की दवा मिला कर देने से बच्चे को अधिक हानि पहुँच सकती है। यह समझना अति आवश्यक है की जब लुपस की बीमारी को काबू में रखने के लिए दवाएं दी जा रही होती हैं, तब उन्हें यथायक बंद करने से बीमारी की तीव्रता बढ़ सकती है व जानलेवा हो सकती है। इसीलिए किसी अन्य प्रकार की औषधि देने से पूर्व अपने चिकित्सक से सलाह अवश्य कर लें।

२.८. समय समय पर कौन सी जाँचे आवश्यक हैं?

नियमति रूप से चिकित्सक से परामर्श इस बीमारी में आवश्यक होता है क्योंकि इस बीमारी में अधिकांश तकलीफें यदि जल्दी पहचान ली जाएं तो उनका समय पर निदान किया जा सकता है। आमतौर से हर ३ महीने में चिकित्सक से परामर्श अनिवार्य होता है। ज़रूरत के अनुसार विभिन्न परामर्श किये जाने चाहिए जैसे: बाल चार्म रोग विशेषज्ञ, बाल रक्त रोग विशेषज्ञ, बाल गुरदारोग विशेषज्ञ इत्यादि। इनके अलावा साइकोलॉजिस्ट, सामाजिक कार्यकर्ता, आहार विशेषज्ञ व अन्य स्वास्थ्य देखभाल कर्मचारी भी लुपस से पीड़ित बच्चों की देखभाल में मदद करते हैं।

इन बच्चों की कुछ जाँचे नियमति रूप से होनी चाहिए जैसे: रक्तचाप का माप, पेशाब की जांच, रक्त कण व चीनी की मात्रा की जांच, कोएगुलेशन टेस्ट, कॉम्प्लीमेंट लेवल, डी एस डी एन ए इत्यादि। जब लुपस के लिए दवाएं चल रही होती हैं तब नियमति रूप से रक्त कण की जांच अनिवार्य होती है जिससे यह जांच हो जाये की यह दवाएं रक्त कण के बनने में कोई खराबी तो नहीं कर रहीं।

२.९. यह बीमारी कब तक जारी रहती है?

जैसा पहले बताया गया है, इस बीमारी का कोई ठोस निदान नहीं है। नियमति रूप से बाल रोग विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार दवाएं लेते रहने से इस बीमारी के लक्षण पूरी तरह समाप्त हो सकते हैं। अन्य कारकों के अलावा, पूरी तरह दवा ना लेना, संक्रमित रोग होना, मानसिक दबाव होना व अधिक धुप में रहने से यह बीमारी तीव्र हो सकती है। इस को "लुपस फ्लैर" भी कहा

जाता है।

२.१०. लम्बे दौरान में इस बीमारी में क्या होता है?

इस बीमारी का लम्बे दौर के बाद परिणाम दवाओं के प्रयोग से बहुत अच्छा हो सकता है। इस बीमारी से पीड़ित कई बच्चे लम्बे समय तक ठीक रहती हैं। कुछ बच्चों में यह बीमारी गंभीर रूप ले ले कर बचपन व कशिरावस्था में भी रह सकती है व इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। बच्चों में इस बीमारी का परिणाम इस पर भी निर्भर करता है की अंदरूनी अंगों पर कतिना प्रभाव है। जनि बच्चों को दमाग पर अथवा गुर्दे पर प्रभाव होता है, उनको अधिक लम्बे समय तक दवाओं की आवश्यकता पड़ती है। इसके विपरीत जनि बच्चों को हल्की सी त्वचा की तकलीफ व गठिया का असर होता है, उनकी बीमारी दवाओं के माध्यम से जल्दी ही काबू में आ जाती है व लम्बे समय तक शांत रहती है। पर किसी एक बच्चे के लिए यह निश्चित तौर पर कह पाना बहुत मुश्किल है की उसकी बीमारी का दौर कैसा रहेगा।

२.११. क्या यह बीमारी जड़ से समाप्त हो सकती है?

यह बीमारी, यदि शुरुआत में ही पकड़ ली गयी व इसका इलाज शुरू कर दिया गया तब लम्बे समय के लिए इसके लक्षण समाप्त हो जाते हैं। परन्तु यह एक जीर्ण रोग है जो कभी कभी अप्रत्याशित रूप से सामने आ सकता है।